मौर्योत्तरकालीन भारतीय सामाजिक स्थिति

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

मौर्योत्तर काल में सामाजिक व्यवस्था में राजनतिक आर्थिक परिवर्तन के कारण व्यापक असर हुआ| इस समय कट्टर ब्राह्मणवादी धर्म के विस्तार के साथ ही विदेशियों और वर्णसंकरो को वर्णव्यवस्था में स्थान देते हुए वर्णव्यवस्था पर संभावित खतरें को दूर करने का भी प्रयास किया| समाज में शूद्रों एवं महिलाओं की दशा ख़राब कही जा सकती है| हालाँकि कुछ जगह इसके ठीक होने के भी संकेत है| इस काल में वैदिक या ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना तथा महायान बौद्ध धर्म का उदय और विकास तथा जैन धर्म के स्वरूप में कुछ परिवर्तन आदि महत्वपूर्ण धार्मिक क्षेत्र की विशेषता थी|

वर्ण व्यवस्था एवं समाज

इस काल में मूल रूप से परंपरागत वर्ण एवं जाति व्यवस्था बनी रही लेकिन विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के कारण वर्णों की स्थिति में परिवर्तन दिखाई देता है। इस काल में ब्राह्मणों का उत्थान देखने को मिलता है। शुंग, कण्व तथा सातवाहन शासकों ने ब्राह्मणों की सामाजिक और राजनीतिक प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया। ब्राह्मणों ने अनेक राजवंशों की स्थापना की जैसे शुंग, कण्व, भार शिव नाग, वाकाटक आदि। अब ब्राह्मण क्षत्रिय के काम-काज अपनाने लगे| राजा की मंत्री एवं सलाहकार के रूप में भी ब्राह्मणों की प्रतिस्थापना हुई। इनसे ब्राह्मण वर्ण बहुत अधिक प्रभावशाली बना|

इस काल में यज्ञ एवं बलि पर लगा रोक हटा दिया गया। यज्ञ और बलि की प्रथा का पुनः आरंभ ने ब्राह्मणों को समाज का सर्व शक्तिशाली वर्ग बना दिया। इसी काल में मनुस्मृति की रचना की गई| मनुस्मृति को 200 BC से 200 AD के बीच की रचना मानी जाती है। इसने समाज में ब्राह्मण शिष्टता एवं वर्ण व्यवस्था को दृढ़ता से स्थापित किया। ब्राह्मण पुरोहितों को बड़ी मात्रा में दान दक्षिणा दिया जाने लगा। सात वाहनों द्वारा ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिए जाने के भी प्रमाण प्राप्त होते हैं।

काल में हुए व्यापक आर्थिक परिवर्तन ने वर्ण व्यवस्था पर भी अपना प्रभाव प्रदर्शित किया। शूद्रों को उत्पादन कार्य में लगाने की प्रक्रिया मौर्य काल में बड़े स्तर पर प्रारंभ हो गई थी।

इससे समाज में कारीगर और शिल्पी के रूप में शूद्रों का महत्व बढ़ गया। उन्हें कुछ व्यक्तिगत एवं आर्थिक सुरक्षा भी प्राप्त हुई। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ और वे वैश्य के समकक्ष होने लगे। व्यापार और उद्योग के विकास तथा नगरीकरण की प्रगति से वैश्य वर्ग की आर्थिक संपन्नता और बढ़ी।

हालाँकि इस काल में शूद्र वर्ग पर अनेक तरह के प्रतिबंध लाद दिए गए। इस काल की रचना मनुस्मृति कट्टर ब्राह्मणवादी व्यवस्था का समर्थन करता है। शूद्रों का मुख्य कार्य तीन उच्च वर्णों की सेवा करना माना गया। इन वर्गों के हितों को क्षति पहुंचाने अथवा उन पर प्रहार करने पर शूद्रों के लिए कठोर दंड की व्यवस्था की गई। शूद्र वर्ग में इसके प्रति व्यापक असंतोष था| वर्ण व्यवस्था को मान्यता देने वाले विदेशी शासकों के अधीन रहने वाले शुद्र ब्राह्मणों के विरुद्ध थे|

इस काल में लिखे गये मनुस्मृति में भले ही कट्टर ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था का दर्शन दिया गया हो तथा शूद्रों पर अनेक प्रतिबंध स्थापित किए गए हो लेकिन धर्म का सहारा लेकर वर्ण व्यवस्था पर गहरा रहे संकट को भी दूर करने का प्रयास किया गया| जैसे कि बाहरी विदेशियों को द्वितीय दर्जे का क्षत्रिय का दर्जा देने के साथ ही अनेक वर्णसंकर को भी वर्ण व्यवस्था में स्थान दिया गया|

विदेशी लोग लंबे समय से भारत में रह रहे थे और उन्होंने यहां विवाह संबंध स्थापित करने के साथ ही यहां की संस्कृति को अपनाया था| यह शासक वर्ग थे और इन्हें सामाजिक वर्ण व्यवस्था में सम्मिलित नहीं किए जाने से वर्ण व्यवस्था पर खतरे का बादल मंडरा रहा था ऐसे में धर्म ने विदेशियों एवं अनार्यों के आर्यीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस तरह वर्ण व्यवस्था की सर्वोच्चता को बनाए रखते हुए भी बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्ण व्यवस्था की परिकल्पना में संशोधन कर सामाजिक तनाव को कम करने का प्रयास किया जाना इस समय के सामाजिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता कही जा सकती है|

महिलाओं की स्थिति

मौर्योत्तर कालीन समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट देखी गई| उनकी स्वतंत्रता पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए गए उनके घरों में रहने और घरेलू कार्य में व्यस्त रहने की परिकल्पना की गई| उन्हें पुरुषों के अधीन माना गया|

इस काल में बाल विवाह का भी पता चलता है| हालांकि स्त्रियों को कुछ संपत्ति का अधिकार मिला था| दक्षिण भारत और दक्कन क्षेत्र में कुछ स्त्रियों के प्रशासनिक कार्यों में भाग लेने की भी बात सामने आती है। कुछ

स्त्रियों द्वारा दान देने, अभिलेख खुदवाने के प्रमाण मिलते हैं। इस काल तक सती प्रथा जैसी कुरीतियां व्यापक रूप में नहीं फैली थी|

समाज पर विदेशी प्रभाव

हिंदी यवन शक पल्लव पार्थियन और किसानों के भारत में आने से भारतीय और विदेशी तत्वों का संबंध में हुआ इन विदेशी शासकों ने भारतीय धर्म और संस्कृति को आत्मसात कर लिया और वर्ण व्यवस्था के संकर के बीच इन्हें वर्ण व्यवस्था में भी अपना लिया गया। भारतीयों ने इनकी विशेषताओं को धारण किया| जैसे कि शक-कुषाणों जैसे विदेशियों से पगड़ी, लंबे कोट, कुर्ती पतलून, शिरस्त्रान, बूट, लगान, घुड़सवारी जैसी चीजें अपने गयी|